

Dr. DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G.T)

DEPT.OF.PSYCHOLOGY

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI

L.N.M.U DARBHANGA

MOBILE NO:- 6206696451

E-MAIL- dhabeerparasad@gmail.com

SOCIALIZATION

समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति समाजिक परम्पराओं एवं रूढियों के अनुसार व्यवहार करना सीखता है। मनुष्य चूंकि एक समाजिक प्राणी है इसलिए वह समाज की संस्कृति ग्रहण करने की कोशिश करता है।

इसे समाजीकरण के अंतर्गत रखा जाता है क्योंकि

समाजीकरण द्वारा सामूहिक भावना का विकास होता है।

कुछ मनोवैज्ञानिकों ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि-

रॉस के अनुसार- सहयोग करने वाले लोगों में हम भावना का विकास एवं उनकी क्षमता तथा काम करने के संकल्प में वृद्धि समाजीकरण कहलाती है।

वी•वी• अकोलकर के अनुसार- व्यक्ति द्वारा व्यवहार के परम्परागत प्रतिमानों को ग्रहण करने की प्रक्रिया समाजीकरण कहलाती है क्योंकि वह उसके विचारों के संगठन करने पर और उनके द्वारा कार्य करने वाली संस्कृति के प्रति खुलने पर निर्भर करती है।

बोगार्डस के शब्दों में- समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति मानव कल्याण हेतु एक-दूसरे पर निर्भर होकर व्यवहार करने सीखते हैं और ऐसा करने में समाजिक आत्मनियंत्रण, समाजिक उत्तरदायित्व एवं संतुलित व्यक्तित्व का अनुभव करते हैं।

समाजीकरण के कई कारक हैं, जो निम्न हैं:-

1. परिवार-

मानव अपने परिवार का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सदैव ऋणी रहता है जिसमें रहकर वह समस्त प्रकार की परिस्थितियों का सामना करता है। यंग के अनुसार समाज के अंदर विभिन्न साधनों में परिवार सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। परिवार समाजीकरण का सबसे अधिक स्थाई साधन है। बालक का विकास एवं उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति परिवार से ही होती है। इस दृष्टिकोण से समाजीकरण का केन्द्र बिन्दु परिवार ही होता है।

2. जनसंचार के तरीके-

जनसंचार व्यक्ति के समाजीकरण को बहुत महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करता है। रेडियो, टी•वी•, समाचार-पत्र आदि जनसंचार के मुख्य तरीके हैं। जनसंचार द्वारा स्थापित व्यापकता द्वारा राष्ट्र परस्पर निकट आ गये गये है तथा विभिन्न राष्ट्रों के बीच अंतःक्रिया बढ गई है। इसी वजह से विचारों और रीति-रिवाजों का आदान-प्रदान सुगम हो गया है।

3. राजनीतिक एवं धार्मिक संस्थाएँ-

राजनीतिक संस्थाएँ भी समाजीकरण में सहायक होती हैं। धार्मिक संस्थाओं का भी अपना एक महत्वपूर्ण योगदान समाजीकरण में होता है।

4. स्कूल तथा कॉलेज-

जब बालक परिवार से निकलकर स्कूल तथा कॉलेज में आता है तो उसका समाजिक क्षेत्र बढ़ जाता है। स्कूल में नये-नये साथियों के संपर्क में आता है जिनसे वह अनेक समाजिक व्यवहारों को सीखता है।

5. भाषा, जाति एवं वर्ग-

समाजीकरण का महत्व भाषा, जाति एवं वर्ग के परिप्रेक्ष्य में भी बहुत अधिक है। भाषा चूंकि अभिव्यक्ति का साधन है इसलिए भाषा समाजीकरण के प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इसी प्रकार प्रत्येक जाति के अपने रीति रिवाज होते हैं। उनके सदस्य उस समाज की व्यवस्था का पालन करते हैं।

